

डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 27, अनुप्रयोग,

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

अगला पाठ जिसके बारे में हम धार्मिक विश्लेषण के संदर्भ में बात करना चाहते हैं वह इफिसियों अध्याय 2, 11-22 है। मैं पाठ को पूरी तरह से नहीं पढ़ूंगा, और हमने पहले ही इसे अन्य कारणों से संदर्भित किया है, विशेष रूप से हमने नए में पुराने नियम के उपयोग के संदर्भ में कुछ विस्तार से इसका निपटारा किया है, जो पाठ का विश्लेषण करने के लिए सीधे प्रासंगिक है। धर्मशास्त्रीय रूप से और यह समझना कि यह अपने लोगों और समस्त सृष्टि की ओर से इतिहास में ईश्वर के छुटकारे के कृत्यों की व्यापक कहानी के भीतर कहां खड़ा है। लेकिन मैं इसे फिर से थोड़ा और विस्तार से देखना चाहता हूं कि हम इस पाठ को धर्मशास्त्रीय रूप से कैसे पढ़ सकते हैं।

और सबसे पहले, इफिसियों अध्याय 2, 11-22, जब आप इसे पढ़ते हैं, तो आप कई शब्दों पर ध्यान देते हैं जो उभर कर आते हैं, जैसे कि सुलह एक महत्वपूर्ण शब्द है, यहूदी और अन्यजातियों का दो संस्थाओं में मेल-मिलाप, जो पहले एक दूसरे के साथ मतभेद में थे अब एक-दूसरे के साथ मेल-मिलाप हो गया है और शांतिपूर्ण रिश्ते और अस्तित्व में आ गए हैं। मसीह की मृत्यु का विषय, परमेश्वर के लोगों का विषय, फिर से, जिसमें यहूदी और अन्यजाति शामिल हैं। और अंत में, हम पाते हैं कि मंदिर का विषय सामने आ रहा है।

तो यह ईसा मसीह की मृत्यु के माध्यम से ईश्वर की कहानी है, जिसमें यहूदी और गैर-यहूदी, फिर से, दो संस्थाएं जो पहले एक-दूसरे के साथ मतभेद में थीं, को ईश्वर के एक नए लोगों में मिला दिया गया, जो वास्तव में ईश्वर के मंदिर के रूप में, ईश्वर के निवास के रूप में कार्य करते हैं। जगह। और यह विषय वास्तव में इफिसियों की पुस्तक के भीतर ही पुस्तक की शुरुआत के संबंध में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। और इफिसियों अध्याय 1 में, पॉल अपने पाठकों को अध्याय 1, श्लोक 3-14 के इस लंबे खंड में बताता है, कि कई मायनों में, एक सिर के नीचे, वह यीशु मसीह है।

तो पॉल, ईश्वर ने मसीह के माध्यम से अपने लोगों के लिए जो कुछ किया है, उनमें से एक यह है कि उसने ईश्वर के इरादे, उसकी इच्छा को प्रकट किया है, और वह यह है कि अंततः ईश्वर सभी चीजों को एकजुट करना चाहता है, स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी चीजों को एक साथ मिलाना चाहता है। सिर, और वह यीशु मसीह का व्यक्तित्व है। इससे वर्तमान सृष्टि में एक प्रकार की अव्यवस्था का अनुमान लगाया जाता है। यह वर्तमान स्वर्ग और पृथ्वी में एक समस्या मानता है, जो उत्पत्ति 1 और 2 के अनुसार, पाप के कारण है।

इसलिए पाप ने दुनिया में प्रवेश किया है और अव्यवस्था पैदा की है, परेशानी पैदा की है, दुनिया में विखंडन पैदा किया है और शत्रुता पैदा की है, और भगवान सृष्टि में सभी चीजों को, स्वर्ग और पृथ्वी में, एक ही सिर के तहत बहाल करना चाहते हैं, जो कि यीशु मसीह है। अब जब अध्याय 2 आता है तो हम देखते हैं कि यह पहले से ही हो रहा है। इसका उद्घाटन हो चुका है।

और अध्याय 2, 11-22, इस बात का उदाहरण है कि कैसे भगवान पहले से ही मानवता के दो पूर्व शत्रुतापूर्ण और अव्यवस्थित और खंडित भागों, यहूदी और अन्यजातियों को एक नई मानवता में, भगवान के एक नए लोगों में समेटकर पृथ्वी पर सामंजस्य स्थापित कर रहे हैं। अब हम पहले ही देख चुके हैं कि यशायाह, भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक के पाठों के निरंतर संकेत के द्वारा, पॉल यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से यहूदी और अन्यजातियों के इस एकजुट होने को यशायाह के पुनर्स्थापना कार्यक्रम की पूर्ति के रूप में देखना चाहता है। और यशायाह की उस दिन की प्रत्याशा, जहां वे दूर और निकट हैं, जहां अन्यजातियों को भगवान के लोगों में शामिल किया जाएगा, जहां वे भी आएंगे और भगवान की पूजा करेंगे और भगवान के लोग बन जाएंगे, अब बहाल हो गया है, या अब इसका उद्घाटन किया गया है, के व्यक्तित्व के माध्यम से यीशु मसीह।

हालाँकि, हम मंदिर की इस भाषा को भी देखते हैं, विशेष रूप से इफिसियों 2 के बाद के छंदों में, जहाँ ध्यान दें कि पॉल कैसे बदलता है। श्लोक 19 से शुरू करके, वह राष्ट्रीयता, ईश्वर के लोगों के नागरिक होने की बात से हटकर गृहस्थी की ओर बढ़ता है, लेकिन फिर वह मंदिर की ओर बढ़ता

है। पद 20, वह इस बारे में बात करता है, अब यहूदी और अन्यजाति समान रूप से परमेश्वर के घर के सदस्य हैं।

श्लोक 20, प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नींव पर बनाया गया है, जो यशायाह अध्याय 54 और यरूशलेम की बहाली की भाषा को प्रतिबिंबित कर सकता है, जो प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नींव पर बनाया गया है, जिसके मुख्य आधारशिला स्वयं यीशु मसीह हैं। उसमें, मसीह में, पूरी इमारत एक साथ जुड़ जाती है और प्रभु में एक पवित्र मंदिर बन जाती है। और उस में तुम भी एक ऐसा निवास बनने के लिये एक साथ बनाए जा रहे हो जिसमें परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा वास करता है।

तो यह सब एक साथ रखने पर, इफिसियों 2 व्यापक बाइबिल धर्मशास्त्रीय कथा के भीतर खड़ा होता है। इफिसियों 2, जो मेल-मिलाप, ईश्वर के लोगों और मसीह के कार्य, क्रूस पर उनकी मृत्यु, मंदिर की कल्पना पर जोर देता है, के विषयों पर जोर देता है, यह सब पतन में जो बर्बाद हो गया था उसे बहाल करने के ईश्वर के इरादे के व्यापक व्यापक धार्मिक आख्यान के भीतर खड़ा है, परमेश्वर और उसके लोगों के बीच तथा लोगों और अन्य लोगों के बीच अव्यवस्था और विखंडन का कारण क्या था, अब परमेश्वर उसे पुनर्स्थापित करने का अपना इरादा व्यक्त करता है। पूरे पुराने नियम की कहानी में, मंदिर के संदर्भ में, मंदिर वह तरीका था जिससे भगवान अपनी उपस्थिति और अपने लोगों के साथ निवास को बहाल करते थे।

और यशायाह जैसी किताबों में भविष्यसूचक प्रत्याशा, जहां भगवान मानवता, यहूदी और गैर-यहूदी, को भगवान के एक नए लोगों में बहाल करने और एक मंदिर का पुनर्निर्माण करने के अपने इरादे को व्यक्त करते हैं। ईजेकील अध्याय 40 से 48 जैसे ग्रंथों में, भगवान का इरादा अपने मंदिर को पुनर्स्थापित करने का है ताकि वह एक नई रचना में अपने लोगों के बीच में रह सके। वह कहानी अब इफिसियों अध्याय 2 में पूरी होनी शुरू हो गई है, जहां भगवान अब, यीशु मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से, फिर से यह कहानी मसीह में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचती है, मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से, क्रूस पर उनकी मृत्यु के माध्यम से, अब समस्या है उत्पत्ति 3 से पाप जिसने इस अव्यवस्था और विखंडन का कारण बना और भगवान की रचना में समस्याएं पैदा कीं,

अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व से निपटा गया है, ताकि अब भगवान यहूदी और गैर-यहूदी से मिलकर एक नई मानवता स्थापित करें, और अब मानवता स्वयं एक मंदिर बन जाता है जहां भगवान अपनी पवित्र आत्मा के माध्यम से निवास करते हैं।

इसलिए इफिसियों अध्याय 2 इस चल रही कथा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेकिन फिर, यह अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचता है, अंततः, जहां बाकी सब कुछ होता है, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, विशेष रूप से 21 और 22, जहां अब आप भगवान की इमारत पाते हैं, आप भगवान का मंदिर पाते हैं, जिसमें प्रकाशितवाक्य 21 में लोग शामिल हैं और 22, जिसमें यहूदी और गैर-यहूदी शामिल हैं, खंभे इसराइल के 12 गोत्र हैं, नींव मेमे के प्रेरित हैं, चर्च यहूदी और गैर-यहूदी से मिलकर बना है, एक ऐसा स्थान जहां राष्ट्र अब आते हैं और एक नई रचना में शहर में प्रवाहित होते हैं, और मुख्य विशेषता यह है कि अब ईश्वर, अनुबंधित संबंध में, अपने लोगों के बीच, अपने लोगों के मंदिर में निवास करता है। इसलिए प्रकाशितवाक्य 21 और 22 उस चीज़ का अंतिम चरमोत्कर्ष है जो इफिसियों के अध्याय 2 और श्लोक 11 से 22 में पहले से ही घटित होता हुआ देख रहा है, एक नई रचना में, अपने लोगों के साथ ईश्वर का अंतिम निवास, जिसमें यहूदी और अन्यजाति दोनों शामिल हैं। मंदिर।

तो, मैंने बस दो उदाहरण दिए हैं कि कैसे, ऐसा करना थोड़ा आसान है। यह हर पाठ में उतना आसान नहीं है, और मैं यह नहीं कहना चाहता कि हर पाठ का कहानी से सीधा संबंध है, लेकिन फिर भी, जब कोई बाइबिल ग्रंथों का अध्ययन करता है, तो उसे पाठ से उभरने वाले धार्मिक विषयों के प्रति सचेत रहना चाहिए, और किसी को इस बात के प्रति सचेत रहना चाहिए कि यह व्यापक बाइबिल धर्मशास्त्रीय कहानी के भीतर, सिद्धांत के हिस्से के रूप में, सुसंगत और विहित एकता में कैसे फिट हो सकता है जो पुराने और नए नियम के रूप में हमारे पास आई है। आप में से जो लोग इसे वेबसाइट पर एक्सेस कर रहे हैं, वे ध्यान देंगे, प्रोफेसर हिल्डेब्रांड की वेबसाइट पर, मैंने बाइबल की कहानी पर व्याख्यानों की एक श्रृंखला भी रखी है, और इसका उद्देश्य इस व्यापक कथा को और भी अधिक विस्तार से खोलना और प्रकट करना है। कहानी जो पुराने और नए नियम के सिद्धांत से उभरती है।

तो, कोई अधिक विवरण के लिए उस पर जा सकता है। लेकिन बाइबिल धर्मशास्त्र, या पुराने और नए नियम के धर्मशास्त्र, या विशेष रूप से संपूर्ण बाइबिल की एकीकृत कहानी पर कई बहुत उपयोगी पुस्तकें भी हैं। एक बहुत ही संक्षिप्त पाठ जो मुझे उपयोगी लगता है वह डेसमंड अलेक्जेंडर द्वारा लिखित पुस्तक है, जिसका नाम है, फ्रॉम द गार्डन टू द न्यू जेरूसलम।

यह कुछ समान चीजें करता है और उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य 21 और 22 तक विषयों का पता लगाता है। अब मैं जो करना चाहता हूं वह अनुप्रयोग से संबंधित मुद्दों पर संक्षेप में चर्चा करना है, या जैसा कि कुछ विद्वान इसे संदर्भिकरण कहते हैं। मेरी राय में, ईसाइयों के लिए व्याख्या की प्रक्रिया तब तक अधूरी है जब तक वे स्वयं धर्मग्रंथ द्वारा बताए गए तरीके से आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया नहीं देते।

अर्थात्, जब तक पुराने और नए नियम के ग्रंथों को हमारे अपने दिन और स्थिति के लिए प्रासंगिक नहीं बनाया जाता है, ईसाइयों को ईश्वर के रहस्योद्घाटन में आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया देने में सक्षम नहीं बनाया जाता है, जब तक ऐसा नहीं होता है, व्याख्या की प्रक्रिया अधूरी रहती है। फिर, यह इस तथ्य से उपजा है कि हम स्वीकार करते हैं कि बाइबल ईश्वर के शब्द से कम कुछ नहीं है, और ईश्वर अपने लोगों से अपेक्षा करता है कि वे इसके अनुरूप हों और इसका पालन करें और उसके वचन से रूपांतरित हों। तो यह हमारे आधुनिक समय के संदर्भ और स्थिति के लिए भगवान के शब्द का अनुप्रयोग है, या प्रासंगिक बनाना, केवल धर्मग्रंथों से प्रेरित एक निहितार्थ है, और स्वयं धर्मग्रंथ की धार्मिक प्रकृति के निहितार्थ के रूप में भी है।

लेकिन शुरुआत में यह समझना महत्वपूर्ण है कि एप्लिकेशन व्याख्यात्मक प्रक्रिया के अंत में सिर्फ एक ऐड-ऑन नहीं है। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे अंत में निपटाया जाए ताकि आप अपनी व्याख्या करें और पाठ को उसके ऐतिहासिक संदर्भ में समझने का प्रयास करें। और जब आपका काम पूरा हो जाए, तो आखिरी चीज़ जो आप करते हैं वह यह दिखाने के लिए एक एप्लिकेशन पर काम करना है कि व्याख्यात्मक प्रक्रिया के अंत में यह कितना प्रासंगिक है।

इसके बजाय, मैं यह तर्क दूंगा कि अनुप्रयोग, या जिसे कुछ लोग संदर्भिकरण कहते हैं, व्याख्यात्मक प्रक्रिया की शुरुआत में ही हो रहा है क्योंकि हम इसे अपनी संस्कृति और दिन के लिए समझने की कोशिश करते हैं। भले ही हम इसे इसके मूल ऐतिहासिक संदर्भ में समझने की कोशिश कर रहे हैं, हम अभी भी इसे भगवान के धर्मग्रंथों के रूप में उनके लोगों को पढ़ रहे हैं, ताकि हम पहले से ही सोच रहे हैं और पूछ रहे हैं कि हम इसे अपनी संस्कृति और अपने स्थान में कैसे समझते हैं। तो, मेरी राय में, व्याख्या का वास्तविक लक्ष्य ही अनुप्रयोग है।

यह हमारे जीवन को धर्मग्रंथ के अनुरूप बनाना और इसे पढ़ने से रूपांतरित होना है। तो हम पूछते हैं, परमेश्वर का वचन आज भी परमेश्वर के लोगों से कैसे बोलता रहता है? चुनौती यह है कि एक ओर, हम अपने लोगों के लिए भगवान के वचन की चल रही प्रासंगिकता को पहचानते हैं, क्योंकि यह भगवान का शब्द है, हम धर्मग्रंथ की चल रही प्रासंगिकता को पहचानते हैं, जबकि साथ ही हम यह भी मानते हैं कि धर्मग्रंथ का संचार बहुत ही सरल तरीके से किया गया था। विशिष्ट ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ। तो फिर हमें यह पूछना होगा कि हम एक पाठ को कैसे लेते हैं जो एक बहुत ही विशिष्ट ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में तैयार किया गया है, और हम इसे सुनने के लिए अंतर को कैसे पाटते हैं ताकि आज भगवान के लोगों से बात करना जारी रहे, जो खुद को बहुत अलग पाते हैं ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ।

आवेदन के लिए कम से कम बाइबिल के औचित्य में से एक, न्यू टेस्टामेंट के पाठ में ही पाया जाता है, एक पाठ जिसे हमने प्रेरणा के संबंध में माना है, लेकिन केवल यह सुझाव देने के लिए कि बाइबिल भी अपनी निरंतर प्रासंगिकता और अनुप्रयोग की मांग करती है भगवान के लोगों के जीवन के लिए. और हम कई अन्य ग्रंथों की ओर इशारा कर सकते हैं, लेकिन शायद अधिक महत्वपूर्ण में से एक 2 तीमुथियुस 3.16 में पाया जाता है। 2 तीमुथियुस 3.16, सभी धर्मग्रंथ ईश्वर-प्रेरित हैं, यह सबसे स्पष्ट पाठ है जो प्रेरणा को संदर्भित करता है, लेकिन आम तौर पर हम वहां रुकते हैं और हम धर्मग्रंथ के चरित्र के बारे में बात करते हैं जो प्रेरित है और इसका क्या अर्थ है, लेकिन पॉल का इरादा शेष 16 में व्यक्त किया गया है और 17, सभी धर्मग्रंथ ईश्वर द्वारा रचित हैं और निर्देश, फटकार, सुधार और धार्मिकता के प्रशिक्षण के लिए उपयोगी हैं, ताकि ईश्वर के

पुरुष या महिला हर अच्छे काम के लिए पूरी तरह से तैयार हो सकें। तो प्रेरणा का परिणाम भगवान के लोगों का परिवर्तन है।

प्रेरणा का परिणाम भगवान के लोगों को हर अच्छे काम के लिए तैयार करना है। इसलिए मेरी राय में, व्याख्या की प्रक्रिया अधूरी है, न केवल तब तक जब तक हम अनुप्रयोग के स्पष्ट क्षेत्रों को स्पष्ट करने में सक्षम नहीं होते हैं, बल्कि तब तक जब तक हम वास्तव में ऐसा नहीं करते हैं, और जब तक हम वास्तव में शास्त्र को अपने जीवन को बदलने की अनुमति नहीं देते हैं। जब तक ऐसा नहीं होता, व्याख्या की प्रक्रिया अभी तक अपना काम नहीं कर पाई है।

मेरी राय में भी, मुझे लगता है कि व्याख्या को अच्छी तरह से करने के लिए आवेदन करना अधिक कठिन पहलुओं में से एक है। मैं हमेशा छात्रों से कहता हूँ, मुझसे अक्सर छात्र पूछते हैं कि जब मैं पादरी था, तब आपने ग्रीक और हिब्रू भाषा कैसे सीखी, और आपने व्याख्या कैसे लागू की, और मैं अक्सर उन्हें बताता हूँ, या वे भी बताएंगे मुझे बताओ, उपदेश तैयार करने का सबसे कठिन पहलू क्या था? और मैं आमतौर पर उन्हें बताता हूँ, व्याख्या है या व्याख्या, मुझे अक्सर सबसे आसान हिस्सा लगता है, और मेरा मतलब यह नहीं है कि यह आसान था, और मेरा मतलब यह नहीं है कि कठिन पाठ नहीं थे जिनके साथ मुझे संघर्ष करना पड़ा और बहुत काम करना पड़ा, बहुत कठिन है, लेकिन उन सभी चीजों में से जो मैं व्याख्या और धर्मोपदेश की तैयारी में करता था, मैंने बार-बार पाया कि अच्छा अनुप्रयोग करना व्याख्या का सबसे कठिन पहलू था।

लेकिन यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि सबसे पहले, वह व्याख्या, या अनुप्रयोग, या आधुनिक पाठकों और श्रोताओं के लिए धर्मग्रंथ का प्रासंगिकीकरण, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि यह सबसे पहले बाइबिल पाठ की ध्वनि व्याख्या पर आधारित है, उसके मूल ऐतिहासिक संदर्भ में, जैसा कि लेखक ने संभवतः इसका इरादा किया था, जैसा कि पाठकों ने संभवतः इसे समझ लिया होगा। दिलचस्प बात यह है कि इसका एक मॉडल वास्तव में एक कमेंटरी श्रृंखला में परिलक्षित होता है, विशेष रूप से एक कमेंटरी श्रृंखला, जो आम तौर पर सफल परिणामों के साथ होती है, और वह एनआईवी एप्लिकेशन कमेंटरी श्रृंखला है, जो जॉर्डरवन द्वारा निर्मित है, यह एप्लिकेशन प्रदान करने के लिए एक विशिष्ट पद्धति को लागू करने के बारे में जानबूझकर है बाइबिल पाठ

का मूल ऐतिहासिक संदर्भ में पाठ को समझने में निहित है। लेकिन जैसा कि हमने कई दृष्टिकोणों के बारे में बात की है, पहली चीज जो मैं करना चाहता हूँ वह है ड्राइंग एप्लिकेशन में बचने के लिए कुछ त्रुटियों पर संक्षेप में चर्चा करना, और इनमें से कुछ स्पष्ट, लगभग मूर्खतापूर्ण हैं, अन्य कभी-कभी अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, लेकिन पहली गलती, या पहली त्रुटि, मुझे लगता है, ड्राइंग एप्लिकेशन में टालने के लिए समग्र संदर्भ की उपेक्षा है, यानी एक नए या पुराने नियम दस्तावेज़ को उसके साहित्यिक और ऐतिहासिक संदर्भ में रखने में विफलता, और अक्सर इनमें से एक बाइबिल पाठ को गलत तरीके से लागू करने के खतरे, या कारणों में से एक, मुझे खेद है, बाइबिल पाठ को गलत तरीके से लागू करने के कारणों में से एक, अक्सर बाइबिल मार्ग के साहित्यिक या ऐतिहासिक संदर्भ को पहचानने में विफलता है।

मैं भी सोचता हूँ, मेरी राय में, श्रापों में से एक, पद्य और अध्याय विभाजन, विशेष रूप से बाइबिल में पद्य विभाजन, और फिर, मैं इसे समाप्त करने से पहले, एक तरफ पद्य विभाजन है, जैसा कि मैंने पहले कहा था, अध्याय और पद्य विभाजन, कम से कम मेरे लिए, मेरी समझ में, प्राथमिक मूल्य यह है कि हर कोई पाठ में वही स्थान पा सके। क्या आप 100 लोगों के एक समूह से बात करने की कल्पना कर सकते हैं, जो उन्हें अध्याय और पद्य विभाजन के बिना, उत्पत्ति की पुस्तक के बीच में कहीं उसी स्थान को खोजने की कोशिश कर रहे हैं? इसलिए अध्याय और पद्य विभाजन हमें सही स्थान ढूँढने में मदद करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, और हमें वह सही स्थान ढूँढने में मदद करते हैं जो हम चाहते हैं। अन्यथा, अध्याय और पद्य विभाजन, मुझे लगता है, एक अभिशाप हो सकता है, क्योंकि उनमें से एक शाखा छंदों को अलग-थलग तरीके से व्यवहार करने का खतरा है।

छंदों को स्व-निहित इकाइयों के रूप में, ईश्वर द्वारा अपने लोगों से किए गए वादों के रूप में, या ऐसा कुछ, जहां एक पद, या यहां तक कि एक पैराग्राफ को, उस संदर्भ से अलग करके, जिसमें वह घटित होता है, कुछ स्व-निहित इकाई के रूप में माना जाता है, ऐतिहासिक या साहित्यिक. हम पहले ही एक उदाहरण दे चुके हैं कि कैसे संदर्भ की अनदेखी और संदर्भ की उपेक्षा हमें भटका सकती है। और अधिक लोकप्रिय उदाहरणों में से एक फिलिप्पियों 4.13 है, मैं मसीह के माध्यम से सभी चीजें कर सकता हूँ जो मुझे मजबूत करता है।

यदि मैं उस कविता को अलग से लेता हूँ, तो इसे लागू करने का एक तरीका यह है, जैसा कि हमने पहले कहा है जब हम इस कविता के संबंध में साहित्यिक संदर्भ पर चर्चा करते हैं, मैं इसे लागू करने का एक तरीका यह है कि मसीह मेरी मदद करता है एक असंभव काम करना, एक ऐसा काम जो मुझे असंभव लगता है, ईश्वर मुझे इसे करने में सक्षम करेगा, या ईश्वर मुझे एक कठिन विवाह के माध्यम से बने रहने और दृढ़ रहने में सक्षम करेगा, या ईश्वर मुझे कठिन रिश्तेदारों को सहन करने की अनुमति देगा, या ईश्वर मुझे अनुमति देगा एक ऐसी परीक्षा पास करना जिसे पास करना मेरे लिए असंभव लगता है, अक्सर कभी-कभी इसे पढ़ाई न करने के बहाने के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन मुद्दा यह है कि, इस कविता को एक सिद्धांत के रूप में लिया जाता है जो किसी भी स्थिति पर लागू होता है जो मेरे लिए भारी और पूरा करने में बहुत कठिन लगता है, फिर मुझे फिलिप्पियों 4.13 में याद दिलाया गया है, मैं मसीह के माध्यम से सभी चीजें कर सकता हूँ। हालाँकि, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, इसमें कठिनाई यह है कि, जब कोई इसे इसके व्यापक संदर्भ में रखता है, इसके ठीक पहले के छंद, छंद 11 और 12, पॉल स्पष्ट रूप से किसी भी परिस्थिति में जीने की अपनी क्षमता के बारे में बात कर रहा है, कि यह है कि क्या उसके पास प्रचुरता है या क्या उसे इसकी सख्त जरूरत है।

परिस्थिति चाहे जो भी हो, पॉल संतुष्ट रहने में सक्षम है। चाहे उसके पास पैसा हो या न हो, चाहे उसके पास प्रचुरता हो या चाहे वह गरीबी में हो, वह उचित प्रतिक्रिया देने और संतुष्ट रहने में सक्षम है। वह किसी भी परिस्थिति में संतुष्ट रहने में सक्षम है।

और रहस्य यह है कि वह मसीह के द्वारा सब कुछ कर सकता है। अर्थात्, वह किसी भी स्थिति में संतुष्ट होकर रह सकता है क्योंकि मसीह उसे ऐसा करने में सक्षम बनाता है। इसलिए व्यापक संदर्भ को समझने से, किसी पाठ को लागू करने के तरीके में फर्क पड़ता है।

वास्तव में एक मूर्खतापूर्ण उदाहरण देने के लिए, मैं हमेशा किसी न किसी कारण से इसके बारे में सोचता हूँ। यह किसी पाठ को गलत तरीके से लागू करने का एक मूर्खतापूर्ण उदाहरण है, लेकिन

मैं इसका उपयोग करता हूँ क्योंकि यह गंभीर था। इस पाठ को पढ़ने के आधार पर किसी ने जीवन का गंभीर निर्णय लिया।

जब मैं डेनवर, कोलोराडो में कॉलेज में था, तो मैंने एक बार एक पादरी को बोलते हुए सुना था, जो उस चर्च में पादरी बनने के लिए डेनवर आया था, जिसमें मैं जाता था। और मैंने उनके मंत्रालय की सराहना की, और मैं यह नहीं कहना चाहता कि वह झूठे बहानों पर वहां थे या भगवान उन्हें वहां या कुछ और नहीं चाहते थे। मैं उस पर सवाल नहीं उठाना चाहता।

लेकिन मैं यह सवाल जरूर उठाना चाहता हूँ कि वह वहां कैसे पहुंचा। और पहले रविवार को वह वहां था, उसने पुराने नियम के भविष्यवक्ता हागै की पुस्तक अध्याय 1 में एक दिलचस्प पाठ पढ़ा। और जब वह मूल रूप से कुछ पृष्ठभूमि बता रहा था कि कैसे भगवान उसे कोलोराडो में पादरी के पास ले आए थे यह चर्च, और उसने इसे पढ़ा। उन्होंने हागै अध्याय 1 के श्लोक 3 से शुरुआत की। तब प्रभु का संदेश भविष्यवक्ता हागै के माध्यम से आया।

क्या तुम्हारे लिये यह समय है कि तुम अपने छतवाले घरों में रहो, और यह घर खंडहर पड़ा रहे? और पादरी ने आगे कहा, जैसे ही उसने वह श्लोक पढ़ा, उसने चारों ओर देखा और देखा कि वह एक कमरे में बैठा था, जिस पर चौखट लगी हुई थी। मुझे लगता है कि वह उस समय संयुक्त राज्य अमेरिका के अलबामा राज्य में रह रहे थे। लेकिन वह अलबामा में अपने घर में रह रहा था, और उसने चारों ओर देखा और वह एक घर में रह रहा था जिसकी दीवारों पर पैनल लगे थे।

और वह पढ़ता रहा. वह पढ़ता रहा और उसे श्लोक 8 मिला। पहाड़ों पर चढ़ जाओ। और उन्होंने इसे कोलोराडो जाने के आह्वान के रूप में लिया।

तो उसने अब कोलोराडो, पहाड़ों से भरा राज्य, रॉकी माउंटेन राज्य में देखा। अब उसे हागै में कोलोराडो जाने के लिए एक बुलावा मिला। अब, फिर से, मैं वर्षों पहले कोलोराडो के इस चर्च में पादरी बनने के उनके कदम पर सवाल नहीं उठाना चाहता।

और मैं यह सुझाव नहीं देना चाहता कि भगवान उसे वहां नहीं ले जा सकते थे। लेकिन फिर, कठिनाई यह है कि जब आप हाग्वै अध्याय 1 को उसके संदर्भ में पढ़ते हैं, तो संपूर्ण ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भ यह है कि भगवान के लोग, चारों ओर देखने पर जोर देते हैं और वे पैनल वाले घरों में रह रहे हैं, पूरा मुद्दा यह है कि उनके घर उपयुक्त हैं रहने के लिये परमेश्वर का भवन अर्थात् मन्दिर जर्जर हो गया है। और इसलिए अध्याय 1 श्लोक 8 में पहाड़ों पर जाने का आह्वान आगे बढ़ने का आह्वान नहीं है।

यह स्पष्ट रूप से कहता है कि उन्हें लकड़ी काटने के लिए पहाड़ों पर जाना है ताकि वे वापस आएँ और भगवान का घर बनाएँ। तो यह किसी के लिए अपना पैनलयुक्त घर छोड़कर पहाड़ों में जाकर रहने का आह्वान नहीं है। लेकिन यह भगवान के लोगों के लिए एक आह्वान है कि वे बैठें और ध्यान दें कि जब वे आरामदायक वातावरण में रहते हैं, तो भगवान का घर जर्जर स्थिति में है।

और यह भगवान के घर, भगवान के मंदिर के पुनर्निर्माण और इसे अपने जीवन में प्राथमिकता देने का आह्वान है। इसलिए किसी भी आवेदन, किसी भी आवेदन को वैध होने के लिए उसके ऐतिहासिक और उसके सांस्कृतिक और साहित्यिक संदर्भ में फिट होना चाहिए। और किसी भी एप्लिकेशन को इस बात के अनुरूप होना चाहिए कि अनुच्छेद उसके संदर्भ में कैसे कार्य करता है।

एक और उदाहरण जिसके बारे में मुझे क्लेन, ब्लॉमबर्ग और हबर्ड द्वारा बाइबिल की व्याख्या पर एक पाठ्यपुस्तक में अवगत कराया गया था, वह एक पाठ था जिसे मैंने अक्सर पढ़ते हुए सुना था, उदाहरण के लिए, शादियों में या ऐसा ही कुछ। और वह भजन 127 और श्लोक 3 से 5 है। भजन 127 श्लोक 3 से 5 स्पष्टतः परिवारों या पुत्रों के होने, वास्तव में कई पुत्रों के होने और प्रभु की विरासत के रूप में अनेक पुत्रों के होने के गुण का संदर्भ है। . और इस प्रकार श्लोक 3 से 5 तक, बेटे प्रभु की ओर से विरासत हैं, बच्चे उसका प्रतिफल हैं।

जैसे किसी योद्धा के हाथ में तीर होते हैं, वैसे ही जवानी में बेटे पैदा होते हैं। धन्य है वह मनुष्य जिसका तरकश उनसे भरा हो। जब वे फाटक में अपने शत्रुओं से युद्ध करेंगे, तब उन्हें लज्जित न होना पड़ेगा।

अब अक्सर इस श्लोक का उपयोग बड़े परिवार रखने के औचित्य के रूप में किया जाता है, यहाँ तक कि ऐसा करने के आदेश के रूप में भी। विशेषकर पूर्ण तरकश रखने का संदर्भ। लेकिन मुख्य बात, ऐतिहासिक रूप से, अंतिम पंक्तियाँ हैं, जब वे द्वार पर अपने शत्रुओं से संघर्ष करेंगे तो उन्हें शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा।

महत्व यह है कि गेट एक ऐसी जगह थी जहां, जाहिर तौर पर, कोई युद्ध करता था, या कोई कानूनी मामलों का फैसला करने के लिए इकट्ठा होता था। और इसलिए, शायद उस दिन और उम्र में जहां मृत्यु दर बहुत अलग या उससे भी अधिक थी, शायद आज में, एक बड़ा परिवार होने से दुश्मनों के खिलाफ सुरक्षा सुनिश्चित होती है, और कानूनी स्थितियों में भी सुरक्षा सुनिश्चित होती है। इसलिए आज हर किसी के लिए बड़ा परिवार रखने का आह्वान नहीं है, और किसी तरह बड़ा परिवार न रखना अवज्ञाकारी है।

लेकिन इसके बजाय इसे इसके बड़े ऐतिहासिक संदर्भ में समझने की जरूरत है। और ध्यान दें कि इस संदर्भ में संदर्भ मुख्य रूप से बेटों का है। गेट पर बेटियाँ नहीं, वे ही संघर्ष करतीं।

इसलिए यह एक बड़े परिवार के लिए दुश्मनों के खिलाफ सुरक्षा सुनिश्चित करने और कानूनी मामलों में प्रतिनिधित्व का आह्वान है, न कि हर किसी के लिए, विशेष रूप से आज, एक बड़ा परिवार रखने का आदेश है। तो बस यह सुनिश्चित करने के लिए कि अनुप्रयोग किसी पाठ के व्यापक ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भ के अनुरूप है। व्याख्या में एक और त्रुटि या गलती पुराने नियम और नए नियम की मुक्ति ऐतिहासिक या मुक्तिदायी ऐतिहासिक संरचना को पहचानने में विफलता है।

यानी, हम धर्मशास्त्र की अपनी चर्चा में पहले ही देख चुके हैं कि पुराना नियम नए नियम के संबंध में वादे और पूर्ति के रूप में खड़ा है। ताकि कुछ पाठ मसीह के व्यक्तित्व में इस तरह से अपनी पूर्णता पा सकें कि यह पता चले कि उन्होंने पुराने नियम में एक अस्थायी भूमिका निभाई थी। इसलिए हमें यह पूछना होगा कि आखिरकार, जब पुराने नियम में पाठ को लागू करने की बात आती है, तो हमें यह पूछना होगा कि वे पाठ अंततः यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अपनी पूर्ति कैसे पाते हैं? कुछ ग्रंथों के लिए, जैसे कि खाद्य कानून या बलिदान कानून, हम पाते हैं कि वे अब पुराने नियम में लागू नहीं होते हैं, बल्कि वे केवल तभी लागू होते हैं जब वे नए के प्रकाश में यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरे होते हैं। रहस्योद्घाटन जो यीशु मसीह के माध्यम से आता है।

तो बस पुराने नियम में खाद्य कानूनों को देखने के लिए जो कुछ प्रकार के भोजन खाने से मना करते हैं और उन्हें सीधे बोर्ड पर लागू करते हैं, जैसे कि हमें भी उन प्रकार के खाद्य पदार्थों से बचना चाहिए, पुराने और मुक्ति की ऐतिहासिक संरचना को नजरअंदाज करता है नया करार। मुझे लगता है कि अनुप्रयोग में तीसरी विफलता या त्रुटि, उन विभिन्न साहित्यिक विधाओं की उपेक्षा करना है जिन्हें कोई लागू नहीं करता है, उदाहरण के लिए, कथात्मकता को उसी तरह से नजरअंदाज करना जैसे कोई पत्र-संबंधी साहित्य को लागू करता है। विशेष रूप से कथा साहित्य में, संपूर्ण कहानी को समझना और व्यापक और व्यापक साहित्यिक संदर्भ को समझना और कहानी कैसे काम करती है, इसे लागू करना आवश्यक है।

हमने देखा कि निर्गमन 18 के संबंध में, मूसा की कहानी उसके ससुर, जेथ्रो द्वारा कही गई थी, कि वह बहुत कुछ करने की कोशिश न करे, बल्कि कुछ मामलों को सौंप दे। मूसा इसराइल के न्यायाधीश के रूप में कार्य कर रहे हैं, लेकिन जेथ्रो ने मूसा से कहा, तुम ये सब नहीं संभाल सकते। आप अधिक महत्वपूर्ण, बड़े लोगों को संभालते हैं और अन्य लोगों को अन्य व्यक्तियों को सौंप देते हैं।

यदि मैंने केवल निर्गमन 18 पढ़ा होता, तो मैं जिम्मेदारी सौंपने और व्यवसाय चलाने के तरीके के संदर्भ में इसे लागू करने के लिए प्रलोभित हो सकता था। वे वास्तव में मान्य हो सकते हैं, मुझे नहीं पता, लेकिन जब आपने निर्गमन 18 को इसके व्यापक संदर्भ में रखा, तो हमने कहा कि यह एक

कहानी है कि कैसे मूसा को एक सवाल के जवाब में एक कमजोर इंसान के रूप में चित्रित किया गया है, क्या प्रभु वास्तव में हमारे साथ हैं या नहीं? प्रभु को इस्राएल के साथ रहना चाहिए क्योंकि मूसा केवल एक कमजोर इंसान है। मूसा ऐसा नहीं कर सकता।

यह ईश्वर ही होगा जो ये सब कार्य कर रहा है। यह ईश्वर ही होगा जो अपने लोगों के साथ है। इसलिए निर्गमन 18 इस तथ्य की अधिक याद दिलाता है कि भगवान अक्सर यह स्पष्ट करने के लिए हमारी कमजोरियों को प्रदर्शित करते हैं कि यह उनकी शक्ति है जो हमारे भीतर काम कर रही है।

इसलिए एप्लिकेशन को विभिन्न साहित्यिक शैलियों को ध्यान में रखना होगा और यह हमारे पढ़ने के तरीके में कैसे अंतर ला सकता है। अंतिम एक है अपर्याप्त उपमाएँ, किसी पाठ को ऐसे तरीके से लागू करने का प्रयास करना जहाँ हमारी वर्तमान स्थिति और अनुप्रयोग के बीच सादृश्य पूरी तरह से मूल स्थिति पर लागू नहीं होता है। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय इज़राइल को संदर्भित करने वाले पाठ को संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे राष्ट्र पर लागू करना विशेष रूप से इस तथ्य को याद करना है, और यह ऐतिहासिक मुक्ति को पहचानने में विफलता के सिद्धांत को भी ध्यान में रखता है। पुराने और नए नियम की संरचना।

लेकिन, उदाहरण के लिए, जैसा कि मैंने अक्सर सुना है, इसराइल राष्ट्र से किया गया एक वादा लेना कि अगर वे ऐसा करते हैं तो भगवान उन्हें आशीर्वाद देंगे और इसे सीधे बोर्ड पर लागू करना होगा। यदि कोई राष्ट्र, उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका, ताकि ईश्वर उन्हें अपने लोगों के रूप में या एक राष्ट्र के रूप में आशीर्वाद देना जारी रखे, कि उन्हें यह और यह और यह करना चाहिए, विशेष रूप से इस तथ्य को याद करता है कि ईश्वर अब और नहीं दिखाता है किसी एक राष्ट्र को प्राथमिकता। ईश्वर अब अपने लोगों से राष्ट्रीय स्तर पर संबंध नहीं रखता, बल्कि अब केवल यीशु मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से उनसे संबंध रखता है।

ईश्वर के लोग अब अंतरराष्ट्रीय और सांस्कृतिक हैं। या दूसरा उदाहरण नए नियम के पाठ को लेना है जो गुलामी की संस्था, एक स्वामी और उसके दास के बीच के रिश्ते को संदर्भित करता है,

और उन्हें सीधे एक नियोक्ता और एक कर्मचारी के बीच के रिश्ते पर लागू करता है। ऐसा नहीं है कि इसे लागू करने के कुछ तरीके नहीं हैं और हो सकता है कि कुछ अनुप्रयोग न भी हों, लेकिन केवल अंतरों से अनजान रहना है।

यह हमारे समाज में आधुनिक समय के कर्मचारी-कर्मचारी संबंध और प्राचीन स्वामी-दास संबंध के बीच अपर्याप्त सादृश्य पर भरोसा करना है। तो हमें क्या करना चाहिए? फिर, यह कुछ ऐसा है जिसे हमें शुरू से ही करने का प्रयास करना चाहिए। हम केवल व्याख्यात्मक प्रक्रिया के अंत तक ही आवेदन पर ध्यान नहीं देते हैं।

लेकिन इसके बजाय, एक संभावित सुझाव यह है कि हम, और इसे लागू करने का एक बहुत ही सामान्य तरीका बाइबिल के पाठ से एक अमूर्त सिद्धांत निकालना है और फिर पूछना है कि वह सिद्धांत आधुनिक समय की स्थिति और आधुनिक पाठक पर कैसे लागू होता है। यह अनुवाद के तीन पहलुओं के समान है, जहां आपके पास एक स्रोत भाषा है, जो प्राचीन भाषा है और इसके मूल ऐतिहासिक संदर्भ में एक समझ है, इसके बाद एक संदेश है, जो पाठ के मुख्य संदेश को उजागर करने की कोशिश कर रहा है, और फिर इसे एक रिसेप्टर भाषा में संप्रेषित करना, इस तरह से कि जो लोग रिसेप्टर भाषा में पाठ पढ़ रहे हैं वे इसे समझ सकें, विशेष रूप से एक गतिशील समकक्ष अनुवाद के रूप में ज्ञात प्रक्रिया के माध्यम से। तो उसके अनुरूप, हम अक्सर आवेदन की तीन-स्तरीय प्रक्रिया पाते हैं जो कुछ इस तरह दिखती है।

नंबर एक है पाठ का उसके मूल संदर्भ में अध्ययन करके उसके मूल ऐतिहासिक संदर्भ में उसके अर्थ को उजागर करना। कोई लेखक के इच्छित अर्थ के बारे में प्रश्न पूछता है, साहित्यिक ऐतिहासिक संदर्भ के सावधानीपूर्वक अध्ययन के माध्यम से, शब्दों के अर्थ और व्याकरण और साहित्यिक शैली के प्रकाश में, लेखक का इरादा क्या था, इसकी सबसे अधिक संभावना है। मूलपाठ? इसे पहली सदी के पाठकों पर कैसे लागू किया जाता है? फिर दूसरा कदम यह है कि अंतर्निहित अंतर-सांस्कृतिक सिद्धांत क्या है? वह अंतर्निहित अर्थ क्या है जो विशिष्ट मूल ऐतिहासिक स्थिति से परे है? अर्थात्, कालातीत सिद्धांत क्या है, या इस पाठ से उत्पन्न होने वाले कालातीत सिद्धांत क्या हैं? और फिर तीसरा, रिसेप्टर भाषा और अनुवाद की प्रक्रिया के अनुरूप,

यह है कि आधुनिक संदर्भ और स्थिति के लिए क्या हैं, या क्या उपयुक्त नहीं है, या इस सिद्धांत, या इन सिद्धांतों के उचित अनुप्रयोग क्या हैं? और फिर, कई मायनों में यह प्रक्रिया से मिलता-जुलता है, विशेष रूप से गतिशील समतुल्य अनुवादों के साथ, रिसेप्टर भाषा से संदेश की ओर बढ़ना, और फिर उस संदेश को संप्रेषित करना, उसे स्थानांतरित करना, मुझे खेद है, संसाधन भाषा शुरू करना और समझना संदेश, लेकिन फिर उस संदेश को एक रिसेप्टर भाषा में स्थानांतरित करना जो कि अधिकांश पाठकों द्वारा समझा जाएगा जिनके लिए यह अभिप्रेत है। यह कैसे काम कर सकता है इसका एक उदाहरण 1 कुरिन्थियों अध्याय 8 और 9 में पाया जा सकता है। कोई 1 कुरिन्थियों 8 और 9 का अध्ययन कर सकता है, या कोई इसे इसके मूल संदर्भ में अध्ययन करके शुरू कर सकता है।

यह कुरिन्थियों का खंड है जहां पॉल कुरिन्थ में ईसाइयों से मूर्तियों को चढ़ाए गए मांस को न खाने के लिए तैयार रहने का आह्वान करता है, इसलिए अधिकांश समय यदि आपने पहली शताब्दी के कुरिन्थ में मांस खाया होता, तो आप जानते हैं, कोई आपको खाने के लिए आमंत्रित करता है, या आप बाजार से मांस खरीदने का निर्णय लेते हैं, यदि आपके पास ऐसा करने के लिए पैसे हैं, तो आमतौर पर यह होता है कि किसी समय मांस किसी मूर्ति को चढ़ाया गया था, और अब बाजार में बेचा जा रहा है, या अब आप भोजन करने के लिए किसी के घर जाते हैं, और वे मांस परोस रहे हैं जो संभवतः उस दिन पहले एक मूर्ति को चढ़ाया गया था। और कुछ कोरिन्थियन ईसाइयों ने महसूस किया कि ऐसा करना ठीक था, और मूर्तियाँ कुछ भी नहीं हैं, और यह केवल मांस है, और मैं इसे खाकर किसी भी मूर्ति पूजा में भाग नहीं ले रहा हूँ, मैं बस एक अच्छे स्टेक का आनंद ले रहा हूँ या जो भी हो, यह कहते हुए कि मैं पहले ही संदर्भ दे चुका हूँ, लेकिन कुछ कुरिन्थियों ने सोचा कि मूर्तियों को चढ़ाया गया मांस खाना ठीक है, जबकि दूसरों को लगा कि उनका विवेक उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं देगा, उन्हें लगा कि यह गलत था। और पॉल कुरिन्थ में उन लोगों को संबोधित करते हैं जिन्होंने सोचा कि ऐसा करना ठीक है, उस अधिकार को छोड़ने के लिए तैयार रहें, ताकि किसी अन्य ईसाई को ठोकर न खानी पड़े, और इससे उनका तात्पर्य उन्हें ठेस पहुंचाना या उन्हें महसूस कराना नहीं है। बुरा है, लेकिन वास्तव में उन्हें उस गतिविधि में इस तरह से भाग लेने के लिए प्रेरित करना है जो उनके विवेक का उल्लंघन करता है।

फिर जो सिद्धांत इस पाठ से निकलता है, या इस पाठ से निकल सकता है, वह यह है कि पॉल ईसाइयों से अपने अधिकारों को छोड़ने के लिए तैयार होने का आह्वान करता है, या इस पाठ का सिद्धांत यह होगा कि आप अपना अधिकार छोड़ने के लिए तैयार रहें। यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए, ताकि मसीह के विश्वास, या यीशु मसीह में किसी अन्य ईसाई के विश्वास में बाधा न आए, और उन्हें ऐसी गतिविधि में भाग लेने के लिए मजबूर न करें जिसके बारे में वे जानते हैं कि यह गलत है। आवेदन, विशिष्ट विवरण दिए बिना, यह पूछने के लिए होगा कि हमारे अपने चर्च के संदर्भ में, हमारे अपने दिन और उम्र में किन विशिष्ट तरीकों से, हमें इसे अनदेखा करने, इसका उल्लंघन करने का खतरा हो सकता है। संभवतः मांस खाने से ऐसा नहीं होगा।

हममें से अधिकांश समाजों में नहीं रहते हैं, हममें से कुछ लोग हो सकते हैं, लेकिन हममें से बहुत से लोग ऐसे समाजों में नहीं रहते हैं जहाँ आप सुपरमार्केट में जाते हैं और मांस खरीदते हैं, और यह संभवतः किसी मूर्ति को चढ़ाया जाता था। तो संभवतः आवेदन का यह रूप बदल जाएगा। इसके बजाय, हम पूछेंगे कि इस पाठ को लागू करने में आधुनिक समय की अधिक उपयुक्त उपमाएँ क्या हैं।

तो यह त्रि-स्तरीय विधि एक बहुत ही सामान्य विधि है, जिसे अक्सर प्रिंसिपलाइजिंग के रूप में जाना जाता है, जो कि अपने मूल संदर्भ में पाठ के अध्ययन के माध्यम से उस अर्थ या सिद्धांत की पहचान कर रही है जो संदर्भ से परे है, जिसे अब इसमें रखा या लागू किया जा सकता है नया संदर्भ, एक सिद्धांत या सिद्धांत। अधिकांश यह सुझाव नहीं देना चाहेंगे कि केवल एक ही है। हालाँकि उस दृष्टिकोण में बहुत अधिक मूल्य है, साथ ही यह पहचानना भी महत्वपूर्ण है कि इसे एक यांत्रिक दृष्टिकोण के रूप में नहीं माना जाना चाहिए, कि एक सरल तीन-चरणीय विधि, एक नुस्खा की तरह, कि यदि आप सही तरीकों को लागू करते हैं, कि अनुप्रयोग स्वाभाविक रूप से उभरता है।

उदाहरण के लिए, मेरी राय में, वैध अनुप्रयोगों पर पहुंचने के लिए बहुत अधिक रचनात्मकता और सावधानीपूर्वक सोच होनी चाहिए। लेकिन इसके अलावा, मुझे लगता है, शायद उस त्रि-स्तरीय दृष्टिकोण को अपनाने के लिए, किसी को एप्लिकेशन की अधिक संवादात्मक प्रकृति, या

एप्लिकेशन की अधिक इंटरैक्टिव प्रकृति को भी पहचानना होगा। जैसा कि मैंने कहा, आवेदन प्रक्रिया की शुरुआत में, कोई न केवल मूल संदर्भ में इस पाठ के अर्थ के बारे में सोच रहा है, बल्कि आम तौर पर यदि आप इसके बारे में सोचते हैं, जब आप बाइबिल पाठ के पास जाते हैं, तो व्यक्ति की रुचि होती है, अंततः, यह पूछने पर कि यह पाठ आधुनिक पाठक पर कैसे लागू होता है? इसलिए कुछ लोगों ने प्रस्तावित किया है कि एप्लिकेशन अधिक इंटरैक्टिव है।

अर्थात्, प्रक्रिया की शुरुआत में ही, व्यक्ति बाइबिल पाठ का उसके संदर्भ में अध्ययन करना शुरू कर देता है। लेकिन साथ ही, व्यक्ति संभावित उपमाओं और संभावित अनुप्रयोगों और आज के पाठकों के लिए उस पाठ की संभावित प्रासंगिकता के प्रति भी सतर्क है। लेकिन मुझे लगता है कि दो अन्य कारक हैं, बाइबिल पाठ का कोई भी अनुप्रयोग, चाहे मैं एक सिद्धांत निकाल रहा हूँ जिसे मैं बाद की स्थितियों में लागू करूँगा, पाठ का कोई भी अनुप्रयोग कम से कम दो कारकों के अनुरूप होना चाहिए, और वह यह है कि सिद्धांत अवश्य होना चाहिए निर्देशित रहें, सिद्धांत और उसके अनुप्रयोग को पुस्तक के व्यापक संदर्भ द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए।

यानी, पाठ में जो चल रहा है, उसका व्यापक संदर्भ के साथ सामंजस्य होना चाहिए। और दूसरा, कोई भी सिद्धांत और उसका अनुप्रयोग उस पाठ के उद्देश्य के साथ, उस पाठ के इरादे के अनुरूप होना चाहिए। पाठ क्या करने का प्रयास कर रहा है? उदाहरण के लिए, हमने इसे तब देखा जब हमने कानूनी साहित्य, या कानून की शैली के बारे में थोड़ी बात की, कि पुराने नियम में जो कानून मिलते हैं उनमें से एक किसानों को आदेश देता है कि वे अपने खेतों को किनारे से न काटें, बल्कि कुछ फसलें खड़ी छोड़ दो।

कोई पूछ सकता है कि क्या यह वैध आवेदन है कि यह केवल किसानों के लिए है, और उन्हें अपनी सभी फसलें नहीं काटनी चाहिए? या इसके बजाय, इसके इरादे के अनुरूप, व्यापक संदर्भ के साथ, और इस कानून का इरादा यह है कि इसराइल के बीच गरीबों की देखभाल इसी तरह की जाएगी। तो उस आदेश, या उस कानून की मंशा के अनुसार, अब मैं पूछता हूँ कि उस कानून में गरीबों की देखभाल करने का सिद्धांत या इरादा, मेरी स्थिति में कैसे लागू किया जा

सकता है? फिर, उन उपमाओं की तलाश है जो उस कानून के इरादे के अनुरूप हों। तो वे दो कारक, जो सिद्धांत हम प्राप्त करते हैं और उसका अनुप्रयोग, व्यापक संदर्भ द्वारा सुसंगत और निर्देशित होना चाहिए, और पाठ के इरादे के साथ सुसंगत और निर्देशित भी होना चाहिए।

तो आवेदन की प्रक्रिया कैसी दिख सकती है? सबसे पहले, एक बार फिर, एक दुभाषिया के रूप में, मैं पाठ की दुनिया में प्रवेश करता हूँ। मैं पाठ को समझने की कोशिश करता हूँ और व्याख्या के उन तरीकों को लागू करके, जिन पर हमने चर्चा की है, पाठ को उसके व्यापक ऐतिहासिक संदर्भ के प्रकाश में, उसके साहित्यिक संदर्भ के प्रकाश में, उसकी शैली के प्रकाश में समझने की कोशिश करता हूँ।, इसके धार्मिक संदर्भ के प्रकाश में। मैं पाठ को समझने का प्रयास करता हूँ, और पाठ की दुनिया में प्रवेश करता हूँ, और इसे अपनी शर्तों पर समझता हूँ।

जैसे ही मैं ऐसा करता हूँ, और जैसे ही मैं पाठ को समझता हूँ, मुझे पाठ की प्राचीन दुनिया और मेरी अपनी दुनिया के बीच संभावित संबंध दिखाई देने लगते हैं। और मैं बाइबिल की दुनिया और अपनी दुनिया के बीच संभावित ओवरलैप देखना शुरू कर देता हूँ। लेकिन मैं पाठ का अध्ययन करना जारी रखता हूँ, और मैं इन संभावित पत्राचारों को इस आधार पर तौलना जारी रखता हूँ कि क्या वे बाइबिल पाठ के अनुरूप हैं।

क्या वे बाइबिल पाठ के व्यापक संदर्भ के अनुरूप हैं? क्या वे उस पाठ के इरादे और उद्देश्य के अनुरूप हैं? तो संक्षेप में, मैं पाठ को पढ़ने से प्राप्त होने वाले प्रश्नों और अंतर्दृष्टि को बाइबिल पाठ द्वारा ही चुनौती देने की अनुमति दे रहा हूँ। मैं पाठ पर अपने दृष्टिकोण को पाठ के अध्ययन से ही आकार देने की अनुमति दे रहा हूँ। इसलिए मैं बाइबिल पाठ का अध्ययन करना जारी रखता हूँ, और इसकी दुनिया में प्रवेश करता हूँ।

मैं पाठ का संदेश सुनना चाहता हूँ। और अंत में, मैं फिर, किसी भी प्रस्तावित एप्लिकेशन का परीक्षण करता हूँ कि क्या यह संदर्भ में फिट बैठता है, और क्या यह पाठ के उद्देश्य या इरादे में फिट बैठता है। तो यह कठोर तीन-चरणों का पालन करने की तुलना में थोड़ा अधिक इंटरैक्टिव

दृष्टिकोण है, पाठ का उसके मूल संदर्भ में अध्ययन करें, सिद्धांत निकालें, और फिर आवेदन के तरीकों की तलाश करें।

लेकिन शायद उस पद्धति को अपनाते हुए और इसे पाठ के साथ अंतःक्रिया के रूप में अधिक देखता हूं, जहां फिर से, मैं पाठ की दुनिया में प्रवेश करने की कोशिश करता हूं, और संभावित पत्राचार को पहचानना और तलाशना शुरू करता हूं, लेकिन लगातार पाठ को देखकर उनका परीक्षण करता हूं, और व्यापक संदर्भ और पाठ के इरादे और उद्देश्य के आधार पर पत्राचार और अनुप्रयोगों का परीक्षण करें। एक अंतिम चरण है जो अक्सर आवेदन में छूट जाता है, और वह यह है कि पाठक को आज्ञापालन करके प्रतिक्रिया देनी चाहिए। जब तक कोई वास्तव में इसका पालन करके प्रतिक्रिया नहीं देता है, और पाठ को अपने जीवन को बदलने की अनुमति नहीं देता है, तब तक पाठ के अनुप्रयोगों को उजागर करना या सामने आना पर्याप्त नहीं है।

व्याख्या की प्रक्रिया अभी तक पूरी नहीं हुई है, जब तक कि यह पाठक में एक ऐसी प्रतिक्रिया उत्पन्न न कर दे जो उस प्रतिक्रिया के अनुरूप हो जिसे पाठ द्वारा ही कहा गया है। जब अनुप्रयोग की बात आती है तो उल्लेख करने योग्य कुछ अतिरिक्त विशेषताएं हैं, सबसे पहले, मुझे विश्वास है कि बाइबिल पाठ की व्याख्या अंततः यीशु मसीह के चर्च की सेवा में की जानी चाहिए। हमारी विद्वता और व्याख्या का अंतिम संदर्भ कॉलेज या मदरसा नहीं है, और यह हमारी सीखी हुई बाइबिल सोसायटी नहीं है, हालांकि वे हमारे द्वारा किए जाने वाले काम पर महत्वपूर्ण जांच प्रदान कर सकते हैं, लेकिन अंततः हमारी व्याख्या को चर्च के लिए प्रासंगिक होना दिखाया जाना चाहिए यीशु मसीह।

धर्मग्रंथ उस चर्च के समुदाय को आकार देने के लिए है जिससे मैं जुड़ा हूं। इसलिए आवेदन केवल यह पूछने से अधिक है कि मेरे अपने जीवन में क्या सुधार की आवश्यकता है, यह यह भी पूछता है कि मैं चर्च के संदर्भ में, भगवान के लोगों के संदर्भ में पवित्रशास्त्र को कैसे जी रहा हूं। तो अंततः, व्याख्या और अनुप्रयोग चर्च के संदर्भ में होना चाहिए, और भगवान के लोगों, यीशु मसीह के चर्च की सेवा में होना चाहिए।

दूसरा, इससे संबंधित, जब हम ऐसा करते हैं, तो हमें पता चलता है कि भगवान के विश्वासियों का समुदाय सांस्कृतिक है और दुनिया भर में फैला हुआ है, और उस सीमित ऐतिहासिक सांस्कृतिक संदर्भ से कहीं अधिक व्यापक है जिसमें मैं खुद को पाता हूँ, इसलिए मुझे भी आवाज सुननी चाहिए अन्य लोगों की जिन्होंने पाठ की व्याख्या की है और पढ़ा है और इसे स्वयं पर लागू किया है, ताकि मुझे चीजों को देखने के नए तरीके देखने में मदद मिल सके, या जहां मैंने बाइबिल पाठ को गलत समझा या गलत तरीके से लागू किया हो उसे ठीक करने में मदद मिल सके। मैं अधिक से अधिक यह पाता हूँ कि ये आमतौर पर मेरे विदेशी छात्र हैं। मेरा सारा शिक्षण उत्तरी अमेरिकी संदर्भ में, संयुक्त राज्य अमेरिका में रहा है, लेकिन अक्सर यह मेरे विदेशी छात्र ही हैं जो मेरी अपनी व्याख्याओं और बाइबिल पाठ के मेरे अपने अनुप्रयोगों में अस्पष्ट बिंदुओं को देखने में मेरी मदद करने में सहायक रहे हैं।

मुझे यह महसूस करने में मदद करना कि मैं पाठ को उत्तरी अमेरिकी, पश्चिमी, मध्यम वर्ग, श्वेत परिप्रेक्ष्य से देखता हूँ। ऐसा नहीं है कि यह नकारात्मक है, या अनिवार्य रूप से पाठ को धूमिल कर देगा। अन्य दृष्टिकोण भी पाठ को धूमिल कर सकते हैं।

लेकिन कभी-कभी मुझे लगता है कि जो लोग गरीबी और उत्पीड़न की स्थिति से आते हैं, वे बाइबिल के पाठ को बेहतर ढंग से समझने और लागू करने की स्थिति में हैं, क्योंकि मुझे लगता है कि वे ऐसी स्थिति से आते हैं जो बाइबिल के मूल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ के अधिक अनुरूप है। पाठ संबोधित कर रहा था. और इसलिए वे पाठ को बेहतर ढंग से समझने में मेरी मदद करने की स्थिति में हो सकते हैं। क्योंकि वे बाइबिल पाठ के करीब और अधिक अनुरूप स्थिति से आते हैं।

उदाहरण के लिए, मैं रहस्योद्घाटन की पुस्तक और उसके दुख, उत्पीड़न और उत्पीड़न के दर्शन पढ़ता था। या तो यह निश्चित नहीं है कि इसे कैसे लागू किया जाए, अक्सर मैंने सोचा कि यह कुछ ऐसा है जो वास्तव में मुझ पर लागू नहीं होता है, लेकिन शायद किसी दिन बाद इसे लागू किया जाएगा। या, मैंने अक्सर इसे उन छोटे-मोटे और कभी-कभार होने वाले छोटे उपहासों और असुविधाओं पर लागू किया, जिनका मुझे सामना करना पड़ा।

लेकिन, मेरे उन विदेशी छात्रों को सुनने से जो उन संस्कृतियों से आए हैं जहां सुसमाचार के लिए पीड़ा और मृत्यु, या कोई भी पीड़ा और उत्पीड़न और मृत्यु एक वास्तविकता है, खासकर विदेशी उत्पीड़कों के हाथों, मैंने इसे पढ़ना शुरू किया प्रकाशितवाक्य की पुस्तक एक नई रोशनी में। मैंने इसे कभी-कभी अपनी कभी-कभार, तुच्छ, तुच्छ असुविधाओं के संदर्भ के रूप में नहीं पढ़ा, बल्कि इसके बजाय मैंने इसे दूसरों के दृष्टिकोण से पढ़ना शुरू किया। यानी, मैंने पूछना शुरू किया कि मैं दूसरों के दुख और उत्पीड़न में योगदान देने का दोषी कैसे हो सकता हूँ? या, मैं दूसरों के दर्द, पीड़ा और अन्याय को कैसे कम कर सकता हूँ? इसलिए, मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है, फिर से, नंबर एक, क्योंकि हम चर्च के संदर्भ में अपने आवेदन और व्याख्या करने के लिए आवेदन के बारे में सोचते हैं।

यह प्रदर्शित करने के लिए कि बाइबिल का पाठ यीशु मसीह के चर्च के लिए कैसे प्रासंगिक है। और दूसरा, यह पहचानना है कि यीशु मसीह का चर्च पारसांस्कृतिक है। जैसा कि प्रकाशितवाक्य कहता है, चर्च में हर जनजाति, भाषा, भाषा और राष्ट्र के लोग शामिल हैं।

मुझे अन्य संस्कृतियों और देशों में मेरे भाई-बहन क्या पढ़ रहे हैं, वे बाइबिल का पाठ कैसे पढ़ रहे हैं, इसकी व्याख्या करने और सुनने की आवश्यकता है। क्योंकि वे मुझे व्याख्या और अनुप्रयोग में अपने स्वयं के अंध बिंदुओं को देखने में मदद कर सकते हैं। इसलिए, एप्लिकेशन को व्याख्यात्मक प्रक्रिया के अंत में किसी ऐड-ऑन या किसी चीज़ के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

यह व्याख्यात्मक प्रक्रिया का मूल लक्ष्य है। और कुछ मायनों में, यह बिल्कुल शुरुआत से ही शुरू हो जाता है, यह व्याख्यात्मक प्रक्रिया की शुरुआत से ही शुरू हो जाता है। जहां मैं बाइबिल पाठ की दुनिया में प्रवेश करता हूँ।

मैं इसे उसी के संदर्भ में समझने का प्रयास करता हूँ। लेखक का इरादा क्या था उसके आलोक में। लेकिन मैं अपने दिन की प्रासंगिकता के संभावित क्षेत्रों पर विचार करना शुरू कर देता हूँ।

या मैं उन सिद्धांतों को उजागर करने का प्रयास करता हूँ जो मूल ऐतिहासिक स्थिति को पार करने में सक्षम हो सकते हैं और मेरी अपनी स्थिति पर लागू हो सकते हैं। लेकिन जैसा कि मैं ऐसा करता हूँ, मुझे इसका परीक्षण करना होगा कि क्या यह मूल ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भ में फिट बैठता है। चाहे वह पाठ के अनुरूप हो।

और यह भी कि क्या यह मूल पाठ के इरादे और उद्देश्य के अनुरूप है। लेकिन कुल मिलाकर यह तो करना ही पड़ेगा. व्यक्ति को बाइबिल पाठ को लागू करना चाहिए।

क्योंकि पाठ को पढ़ने और व्याख्या करने की प्रक्रिया अधूरी है। शॉर्ट-सर्किट है और शॉर्ट स्टॉप है। जब तक कोई केवल अनुप्रयोगों के क्षेत्रों की खोज नहीं करता।

लेकिन जब तक कोई वास्तव में बाइबिल पाठ के प्रति समर्पण नहीं करता। और इसे हमें बदलने की अनुमति देता है। जब तक हम आज्ञाकारिता से इसका उत्तर नहीं देते।

एक तरह से यह स्वयं शास्त्र द्वारा ही कहा गया है। हमने अभी तक व्याख्या की प्रक्रिया पूरी नहीं की है। अगले सत्र में मैं जो करना चाहता हूँ वह सब कुछ एक साथ लाना है।

और शायद इसे एक रूपरेखा में एक साथ रखने में सक्षम हो सकूंगा। व्याख्यात्मक दृष्टिकोण कैसा दिख सकता है? विशेषकर इंजीलवादी दृष्टिकोण से। हम उन पद्धतियों और आलोचनाओं को कैसे एकीकृत कर सकते हैं जिनके बारे में हमने बात की है।

व्याख्यात्मक दृष्टिकोण कैसा दिख सकता है? और फिर हम भी उस दृष्टिकोण को लागू करके समाप्त करेंगे। बाइबिल के कुछ पाठों में यह दिखाया जा रहा है कि यह कैसे काम करता है।